अनुसंधान – १९९९ – १४
संपादक - विजयशीलचन्द्रसूरि

मुख्य टाइटल

निवेदन

अनुक्रम

षड्दर्शन – परिक्रमः गूर्जर अवचूरि सह – सं. मुनि कल्याणकीर्तिविजय -------------------------- १-१०

अज्ञातकर्तृक बे दृष्टान्त शतको – सं. मुनि धर्मकीर्तिविजय ------------------------------------- ११-१६

अज्ञातकर्तृक समवसरणस्तोत्र – सं. आ. अरविंदसूरि --- २७-३०

मुनि विनयवर्धनलिखित – एक विज्ञप्तिपत्र – सं. मुनि रत्नकीर्तिविजय -------------------------३१-३७

अष्ट महाप्रातिहार्यवर्णनः अपभ्रंशभाषामय आठ पद्य – सं. प्रद्युम्नसूरि --------------------------- ३८-४१

सोमतिलकसूरिविरचितं करहेटकपार्श्वनाथस्तोत्रम् – सं. विजयमुनिचन्द्रसूरि --------------------- ४२-४४

श्री भंवरलाल नाहटा (कलकत्ता) का पत्र -- ४५-४७

कविविल्हरचित-भईमछंद (अणहिलपुर) – सं. भंवरलाल नाहटा ------------------------------- ४८-४९

वाचकश्रीसिद्धचन्द्रगणिकृत न्यायसिद्धान्तमञ्जरी – टिप्पनक – सं. मुनि कल्याणकीर्तिविजय --- ५०-६९

चंदप्पहचरियं नी रूपककथा – सं. सलोनी जोषी -- ७०-९१

सूक्तावली – सं. नीलांजना शाह -- ९२-१०५

कल्पसूत्रमें भद्रबाहु-प्रयुक्त याग शब्द – विजयशळईचन्द्रसूरि --------------------------------- १०६-११२

डॉ. मधुसूदन ढांकीने श्रीहेमचन्द्राचार्य चन्द्रक-प्रदानना समारोहनो तथा आर्य भद्रबाहु और
उनका साहित्य विषयक संगोष्ठीनो संक्षिप्त हेवाल --------------------------------------- ११३-११४

प्रकाशन – वर्तमान --- ११५-११६

टूंक नोंध – विजयशीलचन्द्रसूरि -- ११७-११९

उत्तर गुजरातनी बोलीमां वपराता केटलाक शब्दो – डॉ. रमेश आ. ओझा -------------------- १२०-१२३

गुजरातीमां महाप्राण व्यंजन अल्पप्राण थवो – हरिवल्लभ भायाणी -------------------------- १२४-१३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org